जीअं सूरु सती, सांगो न रखनि सिर जो,
तीअं मिलिया महबूब सां, मरी महबती,
जंहिंखे ड्रिनी सतिगुरूअ, सची रहति रती,
पाए परम गती, सामी माणिनि सेज सुखु.

प्रभु से अनन्य प्रेम करने वाले प्रेमियों/भक्तों के संबंध में सामीजी कहते हैं कि जिस प्रकार शूर-वीर और सती (मृत पति के साथ जीते जी चिता में जल जाने वाली स्त्री) को अपने सिर की, प्राणों की परवाह नहीं होती अर्थात् वे मरण के लिए तैयार रहते हैं, उसी प्रकार परमेश्वर से सच्चा प्रेम करने वाले प्रेमी-जन भी मरने के लिए तैयार रहते हैं। ऐसे प्रेमी मृत्यु के उपरांत प्रियतम परमेश्वर से जाकर मिलते है। ऐसे प्रेमीजनों को उनके सतगुरु ने सच्ची रहनी सिखायी है। उसी के अनुसार सद् जीवन जी कर वे परम गति को, मोक्ष-मुक्ति को प्राप्त हुए हैं। अब वे परमेश्वर संग शय्या पर अलौकिक सुख का आनंद अनुभव कर रहे हैं।

प्रेम ईश्वर की देन है। प्रेम प्रकृति की शक्ति है। अपने प्रियतम से, परम पिता परमेश्वर से प्रेम करना अलौकिक प्रेम है। परमेश्वर के प्रति समर्पण का भाव ही प्रेम है। जीव का सगुण परमात्मा से निष्काम प्रेम-संबंध भक्ति है। आत्मा प्रेम का उत्पत्ति-स्थान है। परमात्मा से किया या प्रेम शुद्ध, पवित्र, निस्स्वार्थ एवं असीम होता है। परमात्मा से प्रेम करने वाले को अपने आपको भुलाना पड़ता है। उसे अपनी देह के अभिमान का त्याग कर 'अहं ब्रह्मास्मि।' की अनुभूति करनी पड़ती है। प्रभु से सच्ची प्रीति करना किसी ऐसे गैर नत्थू खैरे का काम नहीं है। सच्चा प्रेम तो कोई वीर पुरुष ही कर सकता है, जिसने अपनी जान हथेली पर रख दी है। कबीर के शब्दों में-

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जेहि रुचै, सीस देइ ले जाय।।

संत कबीर ने तो प्रेम को तलवार की धार पर चलने जैसा माना है, जिस पर चलते समय थोड़ी-सी चूक जानलेवा बन सकती है। अत: प्राणों की परवाह न करते हुए चलना सच्चे वीरों का ही काम है-

साधु, सती और सूरमा, इनका मत अगाध।
आशा छाँडे देह की, तिन में अधिका साध।।

सामीजी भी इसी मत के हैं। सच्चे प्रेमी, भक्त-जन अपने मन से अविद्या/अज्ञान निकाल कर, सद्गुरु से आत्मज्ञान प्राप्त कर, भक्ति द्वारा परमेश्वर की प्राप्ति करते हैं और प्रियतम-मिलन का सच्चा, अलौकिक आनंद और सुख पाते हैं।

■